वेदसारोपनिषद

जनको ह वैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसृत्य प्रपच्छ को ह वै महानपुरुषोयं ज्ञात्वेह विमुक्तो भवतीति स होवाच । कौशल्येयो रघुनाथ एव महापुरुषः तस्य नामरूपधामलीलामनोवाचनाद्यविषयाः स पुनरुवाचेदृशं कथमहं शक्नुयां विज्ञातुं ज्ञापकाज्ञानादिति स पुनः प्रतिवक्ति अथैते श्लोका भवंति॥

अर्थ - जनक विदेह जी ने याज्ञवल्क्य जी के समीप जाकर कहा - कि निश्चयकर महानपुरुष कौन है जिनको जानकर प्राणी इस संसार से मुक्त होते हैं । यह सुनकर योगी याज्ञवल्क्य जी बोले, कौशल्यानंदन रघुनाथ ही महानपुरुष हैं । उनके नाम, रूप, लीला, धाम चारों मन वचन से अगोचर हैं । यह सुनके फिर जनक जी बोले कि वे कैसे हैं मैं उन्हें जानना चाहता हूँ, और जिज्ञासु उन्हें कैसे जान सकता है ? सो कहिये । यह सुनकर वह बोले, इन सबका मैं श्लोकों से विधिपूर्वक उत्तर देता हूँ, सावधान होकर सुनो, क्योंकि यह सूक्ष्म सिद्धांत है। यथा

विरजायाः परे पारे लोको वैकुण्ठसंज्ञितः ।
तन्मध्ये राजतेयोध्यासच्चिदानन्दस्वरूपिणी ॥
तत्र लोके चतुर्बाहू रामनारायणः प्रभुः ।

अयोध्यायां यदा चास्य ह्यवतारो भवेदिह ॥
तदास्ति रामनामेदमवतारविधौ विभोः ।
तन्नाम्नो नामरहितस्याम्नांत नाम तस्य हि ॥

अर्थ - विरजा नदी के परे उस पार में वैकुण्ठ लोक है। उसके मध्य में सच्चिदानन्दरूप श्रीअयोध्यापुरी शोभा देती है । उस लोक में चतुर्बाहु रामनारायण प्रभु हैं वही जब अयोध्यापुरी में रामावतार धारण करते हैं। अब प्रश्न यह है कि अवतार क्यों धारण करते हैं ? उन सकेतविहारी श्रीराम जी के नाम को सूचित करने के लिए रामनारायण प्रभु राम नाम को धारण करते हैं। यहां पर यह सिद्धांत है कि जो रामनारायण प्रभु हैं वे साकेतविहारी रामजी के चरित्र के आचार्य्य हैं, वे ही अयोध्याजी में रामावतार को धारणकर मन वचन से परे जो नाम, रूप, लीला, धाम है उसको सर्वविदित करते हैं । इसी में आगे कहा गया -

दशकण्ठ वधाद्यादिलीला विष्णोः प्रकीर्तिता ।
स कदचित्तु कल्पेस्मिन लोके साकेतसंज्ञिते ॥
पुष्पयुद्धं रघूत्तंसः करोति सखिभिः सह ।
कस्मिन्कल्पे तु रामोसौ बाणजन्येच्छया विभुः ॥
तैरेव सखिभिः सार्द्धमाविर्भूय रघूद्वहः ।
रावणादिवधे लीलां यथा विष्णुः करोति सः ॥
तथाऽयमपि तत्रैव करोति विविधाः क्रियाः ।
क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णुलीला विधानतः ॥
लीलानिर्वचनीयत्वं ततो भवति सूचितम्।

अर्थ - रावणादिक का वध करना विष्णुलीला कहा है इसलिए किसी कल्प में साकेत लोक में रघूत्तम सखियों के सहित पुष्प युद्ध करते हैं । भाव - पुष्प से क्रीड़ा करते हैं वही साकेत विहारी यह रामचन्द्रजी बाण विद्या की इच्छा करके सखा सखियों के सहित रघूद्वह अवतार धारण करते हैं और रावणादि वध लीला जैसा विष्णु करते हैं वैसे ही सारी लीला विधान क्रिया को श्री साकेतविहारी रामजी भी अयोध्या में नाना विधि से करते हैं । विष्णुलीला के विधान से साकेतविहारी श्रीरामजी अपनी क्रिया अर्थात साकेत के विभवलीला वर्णन करके अनिर्वचनीयत्वलीला अर्थात जो मन वचन से परे हैं वह सूचित है।

किं चाऽऽयोध्यापुरीनाम साकेत इति चोच्यते ॥
इमामयोध्वामाख्याय सायोध्याय वर्ण्यते पुनः ॥
अनिर्वाच्यत्वमेतस्याऽव्यक्तमेवानुभूयते ॥
रामावतारमाधत्ते विष्णुः साकेतसंज्ञिते ॥
तद्रूपं वर्णयित्वानिर्वचनीयं प्रभोः पुनः ॥
रूपमाख्यायते विद्भिर्महतः पुरुषस्य हि ॥
इत्यथर्वणवेदे वेदसारोपनिषदि प्रथमखण्डे ॥

अर्थ - किन्तु जो अयोध्यापुरी नाम है वही को साकेत ऐसा कहते हैं इस अयोध्यापुरी को विख्यात होने के लिए वह अयोध्यावर्णन करते हैं इस अयोध्यापुरी को विख्यात होने के लिए वह अयोध्यावर्णन करते हैं । भाव - भूमण्डल वाली अयोध्या से अनिर्वचनीय अयोध्या सूचित होती है और साकेत में जो विष्णु रामनारायण प्रभु हैं सो रामावतार को धारण करके उस मन वचन से परे प्रभु श्रीरामजी के रूप को वर्णन करके सूचित करते हैं जिसमें साकेतविहारी रामरूप को सब कोई जाने ऐसा अथर्वण वेदोक्तवेदसारोपनिषद के प्रथमखण्ड में कहा है।